Ravi Kant Anand (H.O.D) 24/05/2020
Dept. of Geography

भारत की प्राकृतिक वनसपति (Natural Vegetation of India :-

भारत में वन वर्षा का अनुसरण करता है, जो कि मध्य June से मध्य September तक होता है। भारत का दक्षिणी भाग जल से घिरा हुआ है। दक्षिणी भाग में मानसुनी पवने दो भागों में बँट जाती है, जिसका एक भाग अरब सागर की ओर तथा दूसरी भाग बंगाल की खाड़ी की ओर जाती है। भारत की प्राकृतिक वनस्पति को समझने के लिए मानसून के बारे में जानकारी रखना बहुत जरूरी है। भारत में मुख्य रूप से 5 प्रकार के वन पाए जाते हैं। —

(1) उष्ण कटिबंधीय वर्षा वन :- ये ऐसे वन हैं जहाँ वार्षिक वर्षा 200 cm. तक होती है। सालो भर वर्षा होने के कारण यहाँ वन हरे-भरे होते हैं। इस वन के कुछ प्रमुख वृक्ष महोगिनी, रोजउड, अवोनी, रबड़, सिंक्स सिनकोना, नारियल, तार एवम बाँस है। उष्ण कटिबंधीय वर्षा वन भारत के 4 भागों में पाए जाते हैं।

पश्चिमी घाट का पश्चिमी ढाल
(i) हिमालय का तराई क्षेत्र
(ii) पूर्वी भारत
(iii) अंडमान, निकोबार द्वीप समूह
(iv)

उष्णकटीबंधीय वर्षा के कुछ प्रमुख विशेषताएँ:
इस वन में पाए जाने वाले वृक्ष लम्बे

होते हैं। यहाँ साली भर वर्षा होने के कारण एक वृक्ष का दूसरे वृक्ष से दूरी काफी कम होता है। यहाँ सघन वन होते, इन वनों में जीवों और वनस्पतियों की विविधता पाई जाती है। इस वन में कठोर लकड़ियों का भंडार मिलता है। इसलिए यहाँ की लकड़ियों का भंडार मिलता है इसलिए यहाँ की लकड़ियों की आर्थिक उपयोगिता कम है। इस वन को सदाबहार वन भी कहते हैं क्योंकि यहाँ हरियाली रहती है।

(2) उष्ण कटिबंधीय मानसूनी वन :- इसे पतझड़ वन और पड़पाती वन भी कहते हैं। ये वन भारत के अंदरूनी भाग में पाए जाते हैं। इस वन का विस्तार भारत के उत्तर प्रदेश से लेकर तमिलनाडु और झारखण्ड से लेकर मध्य प्रदेश तक है। यहाँ 100-200 cm तक ही वर्षा होती है। यहाँ मानसूनी पवनों द्वारा मानसूनी वर्षा होती है। यहाँ के वृक्ष शीत ऋतु के बाद और ग्रीष्म ऋतु के पहले अपनी पत्तियाँ गिरा देती हैं क्योंकि इस समय आर्द्रता बहुत कम होती है। इस वन के कुछ प्रमुख वृक्ष शीशम, साल, सागवान, सकुआ, आम, आँवला एवम् चंदन हैं। इसकी दो प्रमुख विशेषताएँ हैं — यहाँ की लकड़ी मुलायम होती है और इन लकड़ियों की माँग हमारे भारत में बहुत है।

(3) कँटीले वन और झाड़ियाँ :- जहाँ 70 cm से कम वर्षा होती है वहाँ इस तरह के

वन पाए जाते हैं। यहाँ के वृक्ष में काँटे होते हैं पत्तियाँ नही होती। पत्तियाँ वाष्पीकरण में मदद करती है। इस वन के कुछ प्रमुख वृक्ष बबूल, खजूर, खेजरा, बेर और नागफनी है। इसका विस्तार भारत के पश्चिमी भाग गुजरात, राजस्थान, पंजाब एवम पश्चिमी उत्तर प्रदेश तक है।

(ii) वृष्टि छाया क्षेत्र - मध्य प्रदेश के इन्दौर से आंध्रप्रदेश के कुन्नूर तक है।

4. पर्वतीय वन :- सतही तल से जैसे-जैसे हम ऊपर जाएँगे तापमान घटता जाएगा। हिमालयी क्षेत्र के जब 1500 - 2500 m. के बीच में शीतोष्ण चौड़ी पत्ती वाले वन मिलते है। शीतोष्ण चौड़ी पत्ती वाले वनों के नाम देवदार ; ओक्ख ; बर्च और मैपिल है। 2500 - 4500 m. के बीच कोणधारी वन, जिनके नाम चीड़ ; स्प्रुस, फर और सनोबर है। 4500 - 4800 m के बीच टुंड्रा वन, यहाँ काई, घास और लीची पाए जाते है।

5. ज्वारीय या डेल्टा वन :- भारत के तटीय क्षेत्र जहाँ नदियाँ आकर मिलती है वहाँ डेल्टा का निर्माण होता है।

भारत के चार प्रमुख डेल्टा -

(i) गंगा - ब्रह्मपुत्र का डेल्टा
(ii) महानदी का डेल्टा
(iii) गोदावरी और कृष्णा का डेल्टा
(iv) कावेरी का डेल्टा

यहाँ के धान क्षारीय होती है और यहाँ की लकड़ी कठोर होती है।